2. सोयाबीन की बोवनी से पहले खेत में एक बार बख्खर अवश्य चलाना चाहिए। इस क्रिया के दौरान अनुशंसित उर्वरक व कीटनाशक डाले जा सकते हैं।
3. बोवनी के पूर्व एवं बोवनी के तुरन्त बाद उपयोगी खरपतवारनाशक दवा के छिड़काव करने पर सोयाबीन की फसल में 20-25 दिन के बीच एक बार डोरा अवश्य चलाना चाहिए।
4. सोयाबीन में खरपतवार नियंत्रण अपनाने के लिये, फसल-चक्र/ अंतरवर्तीय फसल अवश्य अपनाना चाहिए।

उपर्युक्त विधियों से खरपतवार नियंत्रण करने पर सोयाबीन में खरपतवारों से होने वाली उपज में कमी को रोका जा सकता है। खरपतवार नियंत्रण से आने वाले मौसम में खरपतवार तो कम होंगे ही, साथ में फसल पर कीट तथा रोग का प्रकोप भी कम होगा।

सफल खरपतवार प्रबंधन के लिये आवश्यक सावधानियाँ :

1. खरपतवारनाशी के उपयोग का पूर्ण लाभ लेने के लिये अनुमोदित पानी की मात्रा (700-800 लीटर /हेक्टेयर) का ही उपयोग करना चाहिए।
2. अनुमोदित नॉजल (फ्लेट पैन या फ्लड जैट) का ही उपयोग करना चाहिए।
3. रसायनों का उपयोग नमीयुक्त एवं भुरभुरी भूमि पर ही करना चाहिए।
4. पूर्ण क्षेत्र में समान रुप से छिड़काव करना चाहिए।
5. एक रसायन का बार-बार उपयोग न करें।
6. केवल अनुमोदित रसायनों का ही उपयोग करना चाहिए अर्थात् रसायन चक्र अपनाना चाहिए।
7. उपयोग में आने वाली तिथि के पूर्व ही रसायन का उपयोग करना चाहिए।

संकलन एवं संपादन
डॉ. बी.यू. दूपारे एवं
डॉ. एस.डी.बिल्लौरे

तकनीकी मार्गदर्शन
डॉ.एस.डी. बिल्लौरे

प्रकाशक
डॉ. एस.के. श्रीवास्तव, निदेशक

आदिवासी-कृषकों के हित में प्रकाशित (टी.एस.पी.)

विस्तार फोल्डर क्रमांक 2 (2012)

सोयाबीन
में समेकित खरपतवार प्रबंधन

सोयाबीन अनुसंधान निदेशालय
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
खण्डवा रोड, इन्दौर - 452 001 म.प्र.
दूरभाष : 0731-2476188
वेबसाइट: www.dsrindore.org
फैक्स : 0731-2470520
ई-मेल : dsrdirector@gmail.com

सोयाबीन में समेकित खरपतवार प्रबंधन

खरपतवार,कीट व रोग सोयाबीन फसल के उत्पादन में नुकसान करने वाले प्रमुख घटक हैं, जिनमें से अधिकतम हानि (35 से 70 प्रतिशत) खरपतवारों से होती हैं। खरपतवार का प्रकार, सघनता तथा इनकी आयु फसल के उत्पादन में नुकसान करने की क्षमता निर्धारित करती हैं। खरपतवार नैसर्गिक संसाधन जैसे प्रकाश, मृदा, जल, वायु के साथ-साथ पोषक तत्व इत्यादि के लिये भी फसल के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं एवं फसल के लिये उपयोगी उर्वरकों का 20 से 50 प्रतिशत तक हिस्सा खरपतवारों द्वारा अवशोषित किया जाता हैं।

सोयाबीन फसल में प्रमुख रुप से दो प्रकार के खरपतवार पाये जाते हैं -

1. सकरी पत्ती वाले/एक बीज पत्रीय खरपतवार

1) बन्दरा-बन्दरी 2) छोटा चिकिया 3) खेतपपरा
4) दूब 5) धान भाजी 6) सॉवा घास
7) क्रेब घॉस 8) कारना घॉस 9) कॉस
10) दिवालिया 11) बोकना/कनकउआ 12) मकरा
13) पेरा घॉस 14) मोथा आदि।

2. चौड़ी पत्ती वाले (द्विबीज पत्रीय) खरपतवार

1) बड़ी एवं छोटी दूधी 2) जंगली चौलाई 3) सफेद मुर्ग
4) राममुनिया 5) कुप्पी 6) हजार दाना
7) छोटी एवं बड़ी लुनिया 8) जंगली जूट एवं सन 9) भंगरा
10) ग्राउण्डचेरी 11) सेसूलिया आदि।

सोयाबीन की फसल को बोवनी के 60 दिन तक खरपतवारों से अवश्य बचाना चाहिए। इस समय फसल का विकास कम गति से होता हैं। सोयाबीन की फसल में प्रायः सकरी पत्ती वाले खरपतवार अधिक प्रतिस्पर्धी होते हैं। अतः सोयाबीन की अच्छी पैदावार लेने के लिये इनका समेकित प्रबंधन आवश्यक हैं जो कि मुख्यतः निम्न दो विधियों द्वारा किया जा सकता है।

1. यांत्रिक विधियाँ (श्रमिकों से निंदाई एवं डोरा)

सोयाबीन की फसल में 20-25 तथा 40-45 दिनों पर दो बार निंदाई करना आवश्यक है। सुविधानुसार फसल में डोरा/कुलपा का उपयोग बोवनी से 30 दिन से पहले करना चाहिए। उपयोग के समय यह सावधानी रखें कि पौधे/पौधे की जड़ों को कीसी प्रकार की हानि ना हो।

2. खरपतवार नाशक रसायन का उपयोग

कई बार लगातार वर्षा होने से खरपतवार का यांत्रिक नियंत्रण संभव ही नहीं हो पाता हैं। ऐसी परिस्थितियों में खरपतवारनाशकों का प्रयोग उपयुक्त होगा। अपने खेत में पाये गये खरपतवार का प्रकार एवं उनकी सघनता के आंकलन के आधार पर उपयुक्त रसायन का चयन करें तथा पूरे खेत में समान रुप छिड़काव करना आवश्यक हैं। अतः खरपतवारनाशक दवा की अनुशंसित मात्रा का 700-800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव यंत्र में 'फ्लेट पेन या फ्लड जैट' नोजल लगाकर नमीयुक्त भूमि पर ही छिड़काव करना चाहिए। सोयाबीन की फसल हेतु अनुशंसित खरपतवार नाशक रसायनों में से किसी एक का ही उपयोग करें एवं प्रत्येक वर्ष रसायन बदलकर उपयोग करें (तालिका)।

तालिका : सोयाबीन की फसल में अनुशंसित खरपतवारनाशक

खरपतवारनाशक	रसायनिक नाम	व्यापारिक नाम	मात्रा / हेक्टे.
बोवनी के पूर्व (पीपीआई)	फ्लूक्लोरालीन	बासालिन	2.22 ली.
	ट्राईफ्लूरालीन	ट्रेफलान, त्रिनेत्र. तूफान, फ्लोरा	2.00 ली.
बोवनी के तुरन्त बाद (पीई)	मेटालोक्लोर	डुआल	2.00 ली.
	क्लोमाझोन	कमाण्ड	2.00 ली.
	पेण्डीमिथालीन	स्टॉम्प, पनीड़ा	3.25 ली.
	डायक्लोसुलम		26 ग्राम
बोवनी के 10-15 दिन बाद (पीओई)	क्लोरीम्यूरान इथाइल	क्लोबेन, क्यूरीन	36 ग्राम
बोवनी के 15-20 दिन बाद (पीओई)	इमेझेथापायर	परस्युट	1.00 ली.
	क्विजालोफाप इथाइल	टरगा सुपर	1.00 ली.
	हेलाक्सीफाप		1.00 ली.
	फेनाक्सीप्राप -पी- इथाईल	व्हिप सुपर	0.75 ली.

समेकित खरपतवार प्रबंधन

फसल में निरंतरता, जैव विविधता एवं वातावरण दुषित होने के खतरे को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित अनुशंसित विभिन्न विधियों के माध्यम से समेकित खरपतवार प्रबंधन को अपनाकर उत्पादन में निरंतरता हेतु प्रयास करें।

1. रबी फसल की कटाई के पश्चात/गर्मी के मौसम में खेत की गहरी जुताई करें। यदि यह प्रत्येक वर्ष संभव न हो तो दो या तीन वर्ष के अंतराल में यह क्रिया आवश्यक रुप से करें। इससे कीट, रोग एवं खरपतवारों के अवशेष भूमि की सतह पर आते है जो कि गर्मी की कड़ी धूप लगने से निष्क्रिय हो सकते हैं।